प्राक्कथन

इक्कीसवीं सदी सूचना व संचार की सदी होने के साथ-साथ विकासशील व परिवर्तनशील सदी भी है। इक्कीसवीं सदी के युग परिवेश के अंतर्गत प्रत्येक परिस्थितियां काफी प्रभावित हुई है जिसके प्रत्येक संदर्भ में अनेक परिवर्तनों के अनुसार नई-नई शृंखलाओं का जन्म हुआ है। इक्कीसवीं सदी में सामाजिक न्याय एक सार्वभौमिक अवधारणा बन गई है। इक्कीसवीं सदी जो सूचना प्रौद्योगिकी के रूप में हमारी जिन्दगी में प्रवेश कर चुकी है। भूमण्डलीकरण व वैश्वीकरण के विकास के माध्यम से वर्तमान लोगों की आबादी अन्याय से जूझ रही है। सामाजिक न्याय वर्तमान समय की आवश्यकता है। भारतीय संविधान व कानून द्वारा सामाजिक न्याय की स्थापना की गई है। सामाजिक न्याय आज विशेष रूप से दलितों, स्त्रियों, अल्पसंख्यक वर्गों, पीड़ितों, गरीब व्यक्तियों से सम्बन्धित है। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में लेखकों ने वर्तमान समाज की समस्याओं एवं बुराईयों का पर्दाफाश किया है। भारतीय समाज में पीड़ित वर्ग जो अन्याय से पीड़ित है, उन वर्गों की स्थिति को कहानियों के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी विधा ने स्त्रियों व दलितों के प्रति विस्तार से चर्चा की है।

सामाजिक न्याय वर्तमान समय की मांग है। इस सदी की हिंदी कहानियों ने जीवन के यथार्थ रूप का चित्रण किया है। समाज में वे वर्ग जो न्याय से किस प्रकार वंचित है उन सब की समस्याओं की जड़ों तक पहुंच कर एवं गहरे अनुभवों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से स्पष्टीकरण किया है। इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुका समाज आज चहुँमुखी संक्रमण को झेल रहा है। इक्कीसवीं सदी में सामाजिक न्याय की अवधारणा में भारतीय संविधान, समाज के सभी मनुष्यों को समान रूप से जीवन जीने व अपना विकास करने के अवसर प्रदान करता है। परन्तु फिर भी वर्तमान समय में अन्याय दिन प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। भारतीय संविधान द्वारा सामाजिक न्याय की गारण्टी के बाद भी अन्याय बरकरार है। सामाजिक न्याय वर्तमान समय का ज्वंलत मुद्दा है। जो विशेषकर दलितों व स्त्रियों को न्याय से वंचित रखता है। हिंदी कहानियों में रूचि के अनुसार शोध-विषय के नए शीर्षक में रूचि बढ़ती गई।

तमाम स्रोतों से विचारों व रचनाओं को एकत्रित कर वस्तुपरक विश्लेषण के माध्यम से शोध-कार्य संभव हो पाया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का केन्द्रीय उद्देश्य इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी की भूमिका तथा उपयोगिता का अध्ययन-विश्लेषण करना है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का शीर्षक 'इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में सामाजिक न्याय' है। अध्ययन की सुविधा के अनुसार शोध प्रविधि के अनुरूप इस शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय सामाजिक न्याय अवधारणा तथा वैचारिक आधार है। दूसरे अध्याय में समकालीन हिंदी कहानी के संक्षिप्त इतिहास (सन् 1971-2000) को प्रस्तुत किया गया है। समकालीन हिंदी कहानी के संक्षिप्त इतिहास को विस्तारपूर्वक समझाते हुए इक्कीसवीं सदी के युग परिवेश पर भी प्रकाश डाला गया है। तीसरे अध्याय में इक्कीसवीं सदी के प्रमुख कहानीकारों के परिचय को स्पष्ट किया गया है। चौथे अध्याय में इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में सामाजिक न्याय के स्त्री संदर्भ को दर्शाया गया है। पांचवें अध्याय में इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में सामाजिक न्याय के दलित संदर्भ का अध्ययन किया गया है। छठा अध्याय, उपसंहार है जिसमें संपूर्ण शोध-प्रबन्ध के निष्कर्षों को समाहित किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मैं सर्वप्रथम मेरे शोध-निर्देशक डॉ॰ अशोक भाटिया जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध-कार्य में मेरा मार्गदर्शन किया तथा जिनका भावात्मक एवं आत्मीय प्रोत्साहन भी मुझे सदैव मिलता रहा। उनके कुशल मार्गनिर्देशन में ही यह शोध-कार्य संभव हो पाया है। मैं कृतज्ञ हूँ, हमारी विभागाध्यक्षा डॉ॰ सरिता वाशिष्ठ जी की, जिन्होंने मेरे शोध-प्रबन्ध कार्य हेतु संपूर्ण सहयोग प्रदान किया तथा आभारी हूँ, डॉ॰ ओमप्रकाश जी की, जिन्होंने मुझे शोध-कार्य करने की प्रेरणा दी एवं मेरा उत्साह बढ़ाया। मैं अपने माता-पिता तथा परिवार के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके संपूर्ण सहयोग व स्नेह से मुझे आत्मविश्वास मिलता रहा।

दिनांक : **(शालिनी)**